सूरह — एक कहानी

सूरह अल-आ'ला

सबसे बुलंद

पूरा सफ़र — अपने रब-ए-आ'ला के नाम की तस्बीह —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 87 • 19 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

सब्बिह् इस्म रब्बिकल्-आ'ला
1. अपने रब-ए-आ'ला के नाम की तस्बीह कीजिए।

अल्लज़ी क़द्दर फ़-हदा
3. जिसने अंदाज़ा मुक़र्रर किया, फिर राह दिखाई।

व नुयस्सिरुक लिल्-युस्रा
8. और हम आपको आसानी की तरफ़ आसान कर देंगे।

क़द अफ़्लह मन तज़क्का
14. कामयाब हुआ वो जिसने पाकीज़गी इख़्तियार की।

बल तु'सिरूनल्-हयातद्-दुन्या
16. बल्कि तुम दुनिया की ज़िंदगी को तरजीह देते हो।

वल्-आख़िरतु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा
17. हालाँकि आख़िरत बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाली।

रब-ए-आ'ला के नाम की तस्बीह

बेटा, यह सूरह नबी ﷺ को बहुत महबूब थी — आप इसे जुमुआ की नमाज़ में, दोनों ईदों में, और वित्र में पढ़ते थे। जब यह नाज़िल हुई तो आप ﷺ ने फ़रमाया: इसे अपने सजदे में रख लो — इसी लिए हम सजदे में कहते हैं: 'सुब्हान रब्बियल-आ'ला' — पाक है मेरा रब, सबसे बुलंद। बेटा, हर बार जब आप सजदे में जाते हैं, आप इस सूरह की पहली आयत पर अमल कर रहे होते हैं।

'सब्बिह् इस्म रब्बिकल्-आ'ला — अपने रब-ए-आ'ला के नाम की तस्बीह कीजिए।'

बेटा, ग़ौर कीजिए कि अल्लाह फ़रमाते हैं उनके नाम की तस्बीह कीजिए। उलमा तफ़्सीर करते हैं: उनके नाम को हर ना-लायक़ निस्बत से पाक क़रार दीजिए — उसे कभी हल्के अंदाज़ में इस्तेमाल मत कीजिए, कभी झूट में नहीं, कभी झूटी क़सम में नहीं, और कभी किसी ना-मुनासिब चीज़ के साथ जोड़ने मत दीजिए। और 'अल-

आ'ला' — सबसे बुलंद: हर मुक़ाबिल से बुलंद, हर शक से बुलंद, हर उस बयान से बुलंद जो हम कर सकें।

और फिर अल्लाह अपना ता'आरुफ़ चार अफ़आल से कराते हैं — बेटा, यह पूरे क़ुरआन में अल्लाह की निगहबानी का सबसे मुख़्तसर बयान है:

'अल्लज़ी ख़लक़ फ़-सव्वा — जिसने पैदा किया, फिर ठीक बनाया।' उन्होंने सिर्फ़ चीज़ों को वुजूद में नहीं लाया; उन्होंने उन्हें शक्ल दी, मुताबिक़ किया, मुतवाज़िन किया।

'वल्लज़ी क़द्दर फ़-हदा — और जिसने अंदाज़ा मुक़र्रर किया, फिर राह दिखाई।' बेटा, इस जोड़ी को देखिए, क्योंकि इसमें एक पूरा फ़लसफ़ा है। उन्होंने हर मख़लूक़ के लिए एक अंदाज़ा तय किया — और फिर उसे उस अंदाज़े तक पहुँचने की राह दिखाई। उन्होंने तय किया कि शहद की मक्खी शहद बनाएगी, और फिर उसमें छह-पहलू (हेक्सागन) बनाने का इल्म रख दिया। उन्होंने तय किया कि नौमौलूद दूध पिएगा, और फिर उसमें वो फ़ितरी तलाश रख दी। हर मख़लूक़ को तक़दीर भी दी गई और उस तक पहुँचने की हिदायत भी। और इंसान के लिए, बेटा, हिदायत सबसे बुलंद शक्ल में आई: अंबिया और यह किताब।

'वल्लज़ी अख़रजल्-मर'आ — और जिसने चरागाह निकाली — फ़-ज'अलहू ग़ुसा-अन अह्वा — फिर उसे सियाह कूड़ा बना दिया।' हरा, फिर काला ठूँठ। बेटा, हर ज़िंदा चीज़ का पूरा चक्कर आठ अरबी लफ़्ज़ों में: ताज़ा, लहलहाता हुआ, फिर सूखा और बह गया। कटाई के बाद किसी भी खेत को देखिए — आप अपनी ही टाइमलाइन देख रहे हैं।

रसूल से एक वादा

फिर अल्लाह अपने नबी ﷺ से सीधी बात करते हैं, एक ऐसे वादे के साथ जो ख़ुद क़ुरआन की हिफ़ाज़त भी करता है: 'सनुक़्रिउक फ़-ला तन्सा — हम आपको पढ़वाएँगे, तो आप भूलेंगे नहीं — इल्ला मा शा-अल्लाह — मगर जो अल्लाह चाहें।'

बेटा, उस बे-चैनी का तसव्वुर कीजिए कि आप पर वही उतर रही हो और आपको ख़ौफ़

हो कि एक लफ़्ज़ कहीं निकल न जाए। अल्लाह ने उन्हें तसल्ली दी: हम आपसे पढ़वाएँगे; भूलना आपकी फ़िक्र नहीं। और वो इस्तिस्ना — 'मगर जो अल्लाह चाहें' — अल्लाह के मुतलक़ इख़्तियार को क़ायम रखता है: ज़मानत भी उनकी मशिय्यत से है, किसी ख़ुद-मुख़्तार क़ुव्वत से नहीं।

'इन्नहू य'लमुल्-जह्र व मा यख़्फ़ा — बेशक वो जानते हैं जो ज़ाहिर है और जो छुपा हुआ है।'

और फिर, बेटा, एक आयत जो हर मोमिन को दिल में टाँक लेनी चाहिए: 'व नुयस्सिरुक लिल्-युस्रा — और हम आपको आसानी की तरफ़ आसान कर देंगे।'

इसमें दोहरी आसानी महसूस कीजिए। सिर्फ़ 'हम आपके लिए चीज़ें आसान कर देंगे' नहीं — बल्कि 'हम आपको आसान रास्ते की तरफ़ सहूलत देंगे'। अल्लाह बंदे को भी आसान करते हैं, रास्ते को भी, और सिम्त को भी। बेटा, यह दीन अपनी बनावट में ही 'युस्रा' है — आसानी का रास्ता: पाँच नमाज़ें, एक महीने के रोज़े, ज़कात एक छोटी शरह पर, बीमार और मुसाफ़िर के लिए रिआयतें। जिसे दीन कुचलता हुआ महसूस हो, उसने अक्सर वो चीज़ बढ़ा ली है जो अल्लाह ने कभी माँगी ही नहीं।

'फ़-ज़क्किर इन नफ़'अ'तिज़्-ज़िक्रा — तो नसीहत कीजिए, अगर नसीहत फ़ायदा दे।' बेटा, उलमा ने इस आयत के अदब पर बात की: लोगों को याद दिलाइए, और यह समझने की कोशिश कीजिए कि नसीहत कब असर करेगी। बोलने का भी एक वक़्त होता है और इंतिज़ार करने का भी; हिकमत यही है कि पता हो कौन सा वक़्त कौन सा है।

'सयज़्ज़क्करु मन यख़्शा — जो डरता है वो नसीहत क़ुबूल करेगा — व यतजन्नबुहल्-अश्क़ा — और बद-बख़्त उससे कतराएगा — अल्लज़ी यस्लन्-नारल्-कुब्रा — जो सबसे बड़ी आग में जलेगा — सुम्म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या — फिर वो उसमें न मरेगा न जिएगा।'

बेटा, यह आख़िरी सतर क़ुरआन की सबसे होला देने वाली बातों में से है: न मौत, जो ख़त्म कर देती, न ऐसी ज़िंदगी जो क़ाबिल-ए-क़द्र होती। अल्लाह हमें महफ़ूज़ रखें।

दो छोटी आयतें जिनमें सब कुछ है

और अब, बेटा, वो दो आयतें आती हैं जो नजात का पूरा रास्ता समेट लेती हैं — इन्हें याद कर लीजिए, ये छोटी हैं:

'क़द अफ़्लह मन तज़क्का — कामयाब हुआ वो जिसने ख़ुद को पाक किया — व ज़करस्म रब्बिही फ़-सल्ला — और अपने रब का नाम याद किया और नमाज़ पढ़ी।'

बेटा, तीन क़दम गिनिए: तज़्किया — नफ़्स को शिर्क, तकब्बुर, हसद, लालच और गुनाहों की बक़ियात से पाक करना; ज़िक्र — अल्लाह के नाम की याद; और सलाह — नमाज़।

यही पूरा प्रोग्राम है। सौ शर्तें नहीं — तीन। बर्तन साफ़ कीजिए, उनका नाम ज़ुबान और दिल पर रखिए, और उनके सामने खड़े हो जाइए। और अल्लाह ऐसे शख़्स को 'अफ़्लह' कहते हैं — कामयाब, लफ़्ज़ के पूरे माने में: उसने पा लिया, वो बच गया, वो जीत गया।

और कुछ उलमा ने इस आयत को सदक़ा-ए-फ़ित्र और ईद की नमाज़ से जोड़ा है — सदक़े से पाक कीजिए, फिर अल्लाह का नाम याद कीजिए, फिर नमाज़ पढ़िए। बेटा, ग़ौर कीजिए कि हर मुसलमान की ईद की सुबह लफ़्ज़ी तौर पर इन्हीं दो आयतों पर अमल होती है।

फिर अल्लाह उस बीमारी का नाम लेते हैं जो लोगों को इन तीन सादा क़दमों से रोकती है: 'बल तु'सिरूनल्-हयातद्-दुन्या — बल्कि तुम दुनिया की ज़िंदगी को तरजीह देते हो — वल्-आख़िरतु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा — हालाँकि आख़िरत बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाली।'

बेटा, लफ़्ज़ 'तु'सिरून' देखिए — तुम तरजीह देते हो, तुम उसे चुनते हो। बात यह नहीं कि लोग आख़िरत का इनकार करते हैं; ज़्यादातर लोग इसे सच्चे दिल से मानते हैं। मसला तरजीह का है: जब दोनों फ़ैसले के लम्हे में साथ रख दिए जाते हैं — मीटिंग या नमाज़, एक्स्ट्रा आमदनी या सच बोलना, नींद या फ़ज्र — तो फ़ौरन वाला चुन लिया जाता है।

और अल्लाह इस तरजीह का जवाब दो लफ़्ज़ों में देते हैं, बेटा, और यह मुकम्मल दलील है: 'ख़ैरुन' — आख़िरत मेयार में बेहतर है; 'व अब्क़ा' — और वो ज़्यादा चलती है। बेहतर और लंबी। तो ख़ालिस हिसाब से भी — उस शख़्स के लिए भी जो ताजिर की तरह सोचता है — दुनिया को आख़िरत पर तरजीह देना दोनों ए'तिबार से घाटा है: वो घटिया माल भी ले रहा है और छोटी वारंटी भी।

सबसे पुराने सफ़हों में लिखा हुआ

और सूरह अपना पैग़ाम सबसे गहरी तारीख़ में गाड़ कर ख़त्म होती है: 'इन्न हाज़ा ल-फ़िस्-सुहुफ़िल्-ऊला — बेशक यह पहले सहीफ़ों में है — सुहुफ़ि इब्राहीम व मूसा — इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।'

बेटा, क्या शानदार इख़्तिताम है। जो पैग़ाम आपने अभी पढ़ा — अपने रब की तस्बीह कीजिए, ख़ुद को पाक कीजिए, नमाज़ पढ़िए, और गुज़रने वाले को बाक़ी रहने वाले पर तरजीह मत दीजिए — यह सातवीं सदी की कोई नई ईजाद नहीं है। यह इब्राहीम (अलैहि0) के सहीफ़ों में लिखा था और उस में भी जो मूसा (अलैहि0) को दिया गया। वही असल, बार बार भेजा गया, क्योंकि इंसान उसे बार बार भूलता रहता है।

और बेटा, इससे आपको एक गहरा ताल्लुक़ महसूस होना चाहिए। जब आज रात आप नमाज़ के लिए खड़े होंगे, आप कोई नई चीज़ नहीं कर रहे होंगे। आप एक ऐसी ज़ंजीर में शामिल हो रहे होंगे जो नबी ﷺ से होती हुई मूसा (अलैहि0) तक पहाड़ पर, इब्राहीम (अलैहि0) तक आग में, और उस सबसे पहले इंसान तक जाती है जिसे अपने रब का नाम इज़्ज़त के साथ लेना सिखाया गया।

'सब्बिह् इस्म रब्बिकल-आ'ला।' बेटा, यह सूरह इन्हीं अल्फ़ाज़ से शुरू होती है — और हर रोज़, हज़ारों मर्तबा, मुहम्मद ﷺ की उम्मत सजदे में इसका जवाब देती है: सुब्हान रब्बियल-आ'ला। हुक्म दे दिया गया, और जवाब कभी रुका नहीं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. उनके नाम की तस्बीह अमल में कीजिए: उसे कभी हल्के अंदाज़ में, झूट में या झूटी

क़सम में इस्तेमाल मत कीजिए — और हर सजदे में पहली आयत जी लीजिए।

2. वो तक़दीर मुक़र्रर करते हैं और फिर राह दिखाते हैं — भरोसा रखिए कि जिस काम के लिए आप बने हैं, उसकी हिदायत भी आपको दी गई है।

3. यह दीन 'युस्रा' है — आसानी के लिए बनाया गया; अगर दीन कुचलता महसूस हो तो देखिए आपने क्या बढ़ा लिया है जो उन्होंने माँगा ही नहीं था।

4. हिकमत के साथ नसीहत कीजिए: जान लीजिए कि नसीहत कब असर करेगी और कब इंतिज़ार करना है।

5. कामयाबी का तीन क़दमी प्रोग्राम याद कर लीजिए: पाक कीजिए, उनका नाम याद कीजिए, और नमाज़ पढ़िए।

6. मसला अक़ीदे का नहीं तरजीह का है — और आख़िरत दोनों ए'तिबार से जीत जाती है: मेयार में बेहतर, मुद्दत में लंबी।

7. आप एक क़दीम ज़ंजीर का हिस्सा हैं: यही पैग़ाम इब्राहीम और मूसा (अलैहि0) के सहीफ़ों में था।

सुब्हान रब्बियल-आ'ला — या अल्लाह, हमें पाक फ़रमाइए, अपना नाम हमारी ज़ुबानों पर रखिए, और हमें कभी गुज़रने वाले को बाक़ी रहने वाले पर तरजीह न देने दीजिए। आमीन।